साहसी बच्चों की सत्य कथाएं

H
028.5 D 499 R

डा० हरिकृष्ण देवसरे

साहसी बच्चों की सत्यकथाएं

[चालीस बच्चों की रोमांचक कथाएं]

डॉ० हरिकृष्ण देवसरे

Kitab Ghar Delhi

किताब घर
गांधी नगर दिल्ली-110031

भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत उन बच्चों की सच्ची घटनाएं जिन्होंने अपनी नन्हीं-सी आयु में भी निडरतापूर्वक साहसी कारनामे किए और किसी न किसी रूप में लोगों की जान बचाई

H 028.5
D499S

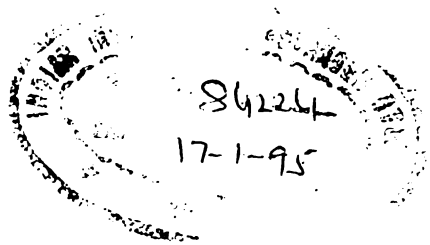

Library IIAS, Shimla
H 028.5 D 499 S
00084224

© प्रकाशक

प्रकाशक ○ किताबघर
मेन बाजार, गांधीनगर, दिल्ली-110031

संस्करण ○ 1993

मूल्य ○ आठ रुपये

मुद्रक ○ एस.वी. ऑफसेट वर्क्स, करतार नगर, दिल्ली-53

SAHASI BACHHON KI SATYA KATHAYAIN (Hindi)
By : Dr. Hari Krishan Devsare Price : Rs. 8 00

क्रम

डूबते को तिनके का सहारा	...	5
आग की लपटों से युद्ध	...	6
तुरत बुद्धि की मिसाल	...	7
पानी पर विजय	...	8
जोखिम से खेल	...	9
पुकार सुनकर दौड़ पड़ा	...	10
एक रोमांचक पदयात्रा	...	11
वह भेड़िये से भिड़ गया	...	13
मौत के मुंह से छीन लिया	...	14
लड़कियों की जान बचायी	...	15
भाई की रक्षक बहन	...	16
डूबते को तिनके का सहारा	...	17
साहसी सतीश	...	18
साहसी बालिका : मोनिका मल्होत्रा	...	20
निर्भीक सोनिया सिनहा का कमाल	...	22
पलक झपकते ही डूबती नाव को बचाया	...	23
घने जंगल और अंधेरी रात में भी अमरीदेवी अकेली नहीं घबराई	...	2
कुएं में डूबने से बचाया	...	2
दो भाइयों का तेंदुए से मुकाबला	...	
पांच वर्ष की लड़की ने एक वर्ष के भाई को आग से बचाया	...	27
आखिर बाढ़ से उसे बचा ही लिया	...	28
उस दिन सुधीर देर से स्कूल पहुंचा	...	29
कुएं में छलांग लगाकर बचाया	...	30
पेरुमल ने दो बार डूबते को बचाया	...	31

राहगीर को डाकुओं से बचाया ... 32
सहेली की जान बचायी ... 33
समुद्री लहरों से युद्ध ... 34
यामखोपाओ, जिसने शेर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये ... 35
साहस का धनी कीकरसिंह ... 36
राजकुमार सिंह : चोर का सुराग ... 37
मौत बगल से गुजर गयी ... 38
वह कुएं में कूद गया ... 39
विषधर से युद्ध ... 40
डूबती बालिका को बचाया 41
आग से खेल ... 42
अंधे कुएं से मित्र को बचाया ... 43
विषधरों से संघर्ष ... 44
फौलाद की पकड़ ... 45
पागल गीदड़ से भिड़ंत ... 46
बिजली से युद्ध ... 48

डूबते को तिनके का सहारा

इतवार का दिन था। तमिलनाडु के एन्नोर नामक स्थान में बालक आर० अन्नामलाई, उसके सहपाठी और एक शिक्षक नाव में बैठकर घूम रहे थे। उस नाव के मल्लाहों ने शायद शराब पी रखी थी। नाव में भी छोटे-छोटे छेद थे। इस बात की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया। नाव गहरे पानी में पहुंच गयी और तब तक छोटे-छोटे छेदों से उसमें पानी भर गया।

अचानक नाव संतुलन खो बैठी और उलट गयी। आठवीं कक्षा के छात्र आर० अन्नामलाई के शब्दों में, "उस समय मेरे चारों ओर अंधेरा छा गया था।" किंतु जब वह पानी की सतह पर आया तो उसे तैरता हुआ एक चप्पू मिल गया। अन्नामलाई ने उसे पकड़कर जब पानी पर तैरते हुए अपने को बचाने की कोशिश की तो उसे लगा कि सचमुच 'डूबते को तिनके का सहारा' बहुत होता है।

इसी समय अन्नामलाई के चार और सहपाठी उसके पास आ गये। अन्नामलाई ने अपने साथ-साथ उन्हें भी बचाने की कोशिश शुरू कर दी। उसके सहपाठियों में से दो ने उसके पैरों को कसकर पकड़ लिया और दो उसके कंधों से चिपट गये। बड़ी विचित्र स्थिति थी। स्वयं के साथ-साथ चार सहपाठियों को भी बचाना आसान काम न था।

अन्नामलाई ने पानी से ऊपर सिर उठाकर सहायता के लिए आवाज लगायी। फिर वह अपने साथ-साथ सहपाठियों को बचाने में जुट गया।

अन्नामलाई की आवाज सुनकर किनारे पर उपस्थित मल्लाह दौड़ पड़े। उन्होंने पांचों बालकों को बाहर निकाला। दुर्भाग्य से अन्नामलाई के उन चार में से दो सहपाठी तो अपना जीवन खो चुके थे, किंतु उसे खुशी इस बात की थी कि दो को बचाने में वह सफल हो गया था।

अन्नामलाई के साहस-भरे इस कार्य के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे पुरस्कृत किया है।

आग की लपटों से युद्ध

यह घटना मणिपुर के एक गांव की है। 15 मार्च, 1978 की बात है। शाम का समय था। माता-पिता कहीं काम से गये थे। घर मे दोनों बेटे—बारह वर्षीय मदनमोहन सिंह और चार वर्षीय ब्रजकिशोर सिंह थे। जब अंधेरा होने को आया तो बड़े भाई मदनमोहन ने लालटेन और 'पोदों' टीन का बना लैंप जला दिया।

छोटे भाई ब्रजकिशोर की दाहिनी आंख का आपरेशन हाल ही में हुआ था और उस पर पट्टी बंधी थी। मदनमोहन कुछ देर के लिए घर के बाहर चला गया। ब्रजकिशोर घर में अकेला खेलता रहा। वहीं मिट्टी के तेल का पीपा रखा था, जिसमें पच्चीस लीटर तेल था। ब्रजकिशोर पहले तो पीपे में हांथ डालकर खेलता रहा। फिर एक लकड़ी ले आया। उसे पहले पीपे में डुबाया, फिर लैंप के पास ले जाकर जलाने लगा।

मिट्टी के तेल में भीगी वह लकड़ी बड़ी तेजी से जल उठी। देखते-देखते आग ब्रजकिशोर के हाथ पर आ गयी और फिर उसकी नायलॉन की कमीज में लिपट गयी। घबराकर ब्रजकिशोर चीखा। उसकी चीख सुनकर मदनमोहन अंदर आया। तब तक आग की लपटें ब्रजकिशोर को लपेट चुकी थीं। मदनमोहन जरा भी न घबराया। उसने झट से अपनी कमीज उतारी और ब्रजकिशोर के चारों तरफ लपेटकर उसे जमीन पर लुढ़का-लुढ़काकर आग बुझाने लगा। ऐसा करने से आग बुझ गयी। ब्रजकिशोर यों तो बुरी तरह जल गया था लेकिन मदनमोहन ने उसे बचा लिया। उस साहसिक कार्य के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे पुरस्कृत किया है।

तुरत बुद्धि की मिसाल

वह दिन बालक चंद्रभान सिंह चौहान के लिए बहुत ही कठिन था। उस दिन यदि चंद्रभान ने साहस और तुरत बुद्धि से काम न लिया होता तो वह अपनी मां और दो बहनों को खो बैठता।

घटना 21 जुलाई, 1978 की है। मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले की ब्यावरा तहसील में जामी ग्राम के नौ वर्षीय बालक चंद्रभान सिंह चौहान ने उस दिन अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया। हुआ यह कि चंद्रभान की मां, उसकी छोटी और बड़ी बहनें—तीनों ए० सी० करेंट वाले बिजली के तार से चिपक गये।

उनकी चीख और घबराहट से बालक चंद्रभान एक क्षण के लिए परेशान जरूर हुआ, लेकिन फिर दूसरे ही क्षण उसे बचाव का उपाय समझ में आ गया। वह तत्काल एक लाठी ले आया। उस लाठी के सहारे उसने बड़ी फुर्ती से तीनों को तार से अलग कर दिया। इस तरह उसकी मां और दोनों बहनों के प्राण बच गये। यदि चंद्रभान ने उस समय साहस खो दिया होता तो बड़ा अनर्थ हो जाता। चंद्रभान को इस उल्लेखनीय कार्य के लिए भारती। बाल कल्याण परिषद् ने पुरस्कृत किया है।

पानी पर विजय

केरल के मालाप्पुरम जिले का एडवन्ना ग्राम। चेलियार नदी की तेज धारा में ढाई वर्ष की एक लड़की अचानक बह गयी। जब तक कोई कुछ करता, वह लड़की नदी की मझधार में जा फंसी। वह लड़की डूबती-उतराती बहती जा रही थी।

तभी बारह वर्षीय बालक कुमारन अरंगेल मोहम्मद नदी की धार में कूदा और पूरी तेजी से तैरता हुआ नदी की मझधार में पहुंच गया। नदी की तेज धार उसका विरोध करना चाहती थी, किंतु बालक अरंगेल मोहम्मद के संकल्प और साहस के सामने न टिक सकी। वह उस लड़की तक पहुंच गया, उसे डूबने से बचा लिया और फिर नदी की तेज धार से जूझता हुआ चल पड़ा किनारे की ओर। यह वापसी पहले संघर्ष से भी अधिक कठिन थी, किंतु अरंगेल मोहम्मद बड़ी शीघ्रता से उस लड़की को किनारे पर ले आया। लड़की का तुरंत प्राथमिक उपचार किया गया और वह बच गयी। इस साहस-भरे काम के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने अरंगेल मोहम्मद को पुरस्कृत किया है।

जोखिम से खेल

असम के लखीमपुर जिले में एक गांव है—सोनारी गांव। मुनींद्र गोगोई नामक सोलह वर्षीय बालक इसी गांव में रहता है। यह एक अत्यंत साहसी और सूझबूझ वाला लड़का है।

कोई सिर्फ साहसी हो या सिर्फ सूझबूझ वाला हो तो शायद उसे अपने काम में उतनी सफलता न मिले, जितनी दोनों गुणों वाले एक बालक को मिल सकती है।

मुनींद्र की सफलता का भी यही राज है। सन् 1974 में 9 अप्रैल को मुनींद्र के गांव की एक दुकान में आग लग गयी। आग बहुत भयानक थी। लपटों ने दुकान को चारों ओर से घेर रखा था।

दुकान में काफी माल था और आग की लपटों को देखकर संपत्ति के बचने की कोई उम्मीद न थी। गांव के उपलब्ध साधनों से आग बुझाने की कोशिश जारी थी, किंतु समस्या तो यह भी थी कि दुकान के अंदर का माल कैसे बचाया जाये।

मुनींद्र ने ऐसे समय पर अपनी जान की परवाह न की। वह आग की लपटों से खेलकर बहुत बड़ी मात्रा में माल निकाल लाया। उसके साहस को देखकर सभी चकित रह गये थे।

सन् 1974 में ही एंक और घटना हुई। 5 जुलाई को मुनींद्र ने डिकरांग नदी में डूबने वाले एक लड़के की जान बचा ली। यहां भी मुनींद्र ने अपनी जान पर खेलकर एक साहसी बालक होने का परिचय दिया। यदि मुनींद्र ने उस समय देर कर दी होती तो वह बालक डूब जाता।

फिर 19 मार्च, 1975 को मुनींद्र के साहस और सूझबूझ का परिचय मिला। उस दिन मुनींद्र ने एक साल की एक बच्ची को ट्रक के नीचे दबने से बचा लिया।

उस समय एक क्षण की देर स्वयं मुनींद्र के लिए भी घातक बन सकती थी, किंतु साहस के धनी इस बालक को जैसे जोखिमों से खेलना ही अच्छा लगता है। इसीलिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने इस वर्ष उसे पुरस्कृत किया है।

पुकार सुनकर दौड़ पड़ा

"बचाओ···बचाओ···हमारे बच्चे को बचाओ!" माता-पिता की इस पुकार को सुनकर बालक बालकृष्णन चौंक पड़ा। वह उस ओर दौड़ पड़ा जिधर वे माता-पिता हाथ-पैर पटक-पटककर चीख रहे थे।

यह घटना केरल के कन्नानूर जिले के पुन्नद गांव में 25 जून, सन् 1978 को हुई थी। हुआ यह था कि वहां पास की एक नहर में छह महीने का एक शिशु पानी में गिर गया।

उसके माता-पिता ने उसे बचाने की कोशिश की, लेकिन वे सफल न हुए। आखिर वे सहायता के लिए चिल्लाने लगे। तभी पुन्नद यू० पी० स्कूल की सातवीं कक्षा का छात्र बालकृष्णन वहां पहुंच गया। उसने पानी में बहते हुए शिशु को देखा तो पानी में छलांग लगा दी।

पानी का बहाव तेज था, फिर पानी में डूबता-उतराता शिशु भी बेहोश हो चुका था, किंतु बालकृष्णन ने साहस न छोड़ा। उसने शिशु को पकड़ लिया और पानी के बहाव से जूझता हुआ उसे किनारे पर लाने में सफल हो गया।

इस काम को करने में वह बुरी तरह थक गया था और थकान के कारण उसकी सांस धौंकनी की तरह चल रही थी, लेकिन उसे इस बात की खुशी थी कि उसने एक डूबते हुए नन्हे-से बालक की जान बचा ली थी।

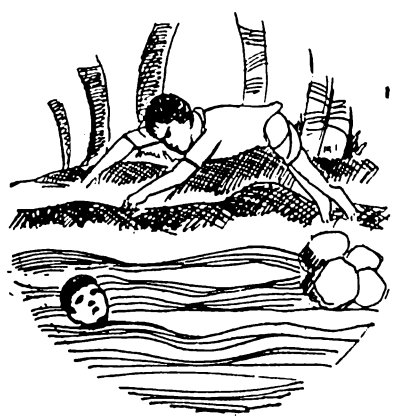

उस शिशु को तुरंत प्राथमिक चिकित्सा दी गयी और उसे होश आ गया। यह बालकृष्णन के साहस और समय पर किये गये कार्य का फल था कि उस छह मास के शिशु को नया जीवन मिल सका।

बारह वर्षीय बालक एन० बालकृष्णन के इस साहसिक कार्य के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे पुरस्कृत किया है।

एक रोमांचक पदयात्रा

आज के युग में यों तो अब लगभग सभी जगह सवारियों से पहुंचना संभव है, लेकिन कभी-कभी पैदल चलने में भी मजा आता है। रास्ता ऊबड़-खाबड़ और जंगली हो और उस पर चलने वाले भटक जायें, तो यात्रा रोमांचक और डरावनी भी बन जाती है। ऐसी ही एक पदयात्रा पर चले थे—जसविंदरपाल सिंह, संजीव नंदा, नितिनकुमार, अवनींद्र चोपड़ा, नवनीत सिंह, संजय भनोट, अजय शर्मा और पुनीत बहल। ये आठों बच्चे कालका से कसौली की पदयात्रा पर निकले थे।

रास्ते-भर बातें होती रहीं, आगे के कार्यक्रम बनते रहे, हंसी-मजाक, खाना-पीना चलता रहा और साथ-साथ उनके पांव भी चलते रहे। इस यात्रा की मस्ती में उनमें से किसी को भी यह ध्यान न रहा कि उनके पांव उन्हें किधर ले जा रहे हैं। कोई दो घंटे तक लगातार चलने के बाद जब उन्हें इस बात का ख्याल आया, तो वे परेशान हो उठे। इतनी देर में तो उन्हें कसौली पहुंच जाना चाहिए था, किन्तु इस समय वे घने जंगलों और पहाड़ों के ढलानों के बीच खड़े थे। अब वापस जाने का मतलब था कि फिर से भटक सकते थे। इसलिए दिशा का अनुमान लगाकर सभी ने साहस के साथ आगे बढ़ने का निश्चय किया।

आगे का रास्ता पहाड़ी, ऊंचा और ढलवां तथा खतरनाक था। आगे बढ़ने पर सबसे पहले उन्हें एक ऊंची मजबूत चट्टानी दीवार का सामना करना पड़ा। उस पर बड़ी सावधानी से पैर जमा-जमाकर उन्होंने बड़ी बहादुरी से पार कर लिया, किंतु आगे एक और नुकीली और संकरी चट्टान उनकी बहादुरी की परीक्षा लेने के लिए खड़ी थी। बच्चों ने उसे भी पार कर लिया और आगे बढ़ गये।

फिर एक चुनौती। कुछ ऐसी चट्टानों पर से उन्हें गुजरना पड़ा, जो बेसहारा थीं। जरा-सी ठोकर लगी और लुढ़क पड़ीं। जाहिर था कि इन पर से गुजरने वाले बच्चे भी गिर सकते थे। आखिर एक घंटे तक लगातार सावधानी से चलने के बाद यह बाल-पदयात्री दल उस मुसीबत से बच सका। इस काम में सबसे अधिक साहस और बुद्धिमानी दिखाई जसविंदर-पाल सिंह ने। वह न केवल साथियों का हौसला बढ़ाता रहा, बल्कि उन्हें आगे चलने में सहारा भी देता रहा। वह अपने जूते खो चुका था और नंगे पांवों उन दुर्गम पहाड़ियों को पार कर रहा था। उसके पैर लहूलुहान हो गये थे, किंतु उसने अपने दुःख की कोई परवाह न की।

अब उनके सामने पहाड़ों की ऊंची-ऊंची हरी-भरी चोटियां थीं। इन्हें पार करना भी असंभव-सा ही लग रहा था। आखिर पुनीत और नवनीत ने पहल की। वे पहाड़ी की चोटी पर पहुंचे और धीरे-धीरे नीचे की ओर सरक चले। फिर तो दल के बाकी साथी भी चढ़े। जसविंदर के पैर घायल हो चुके थे। फिर भी वह संजय और अजय को सहारा देकर उन पहाड़ियों के पार ले आया। इसके बाद वे एक बस्ती में पहुंचे, जहां से आगे वे कसौली के सही रास्ते पर आगे बढ़ सके। इस तरह रास्ता भूल जाने के कारण नौ घंटों बाद कसौली पहुंच सके। इस पूरी यात्रा में जसविंदरपाल सिंह ने जितनी सूझबूझ और साहस का परिचय दिया, उसी का फल था कि पूरा दल उस मुसीबत-भरे रास्ते को पार कर सका। जसविंदर को इस साहस के लिए भारतीय बाल विकास समिति ने राष्ट्रीय पुरस्कार दिया।

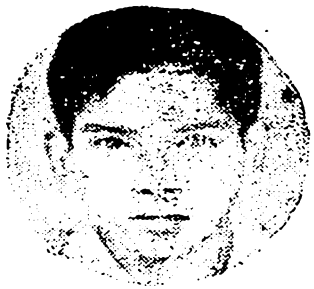

वह भेड़िये से भिड़ गया

स्कूल से छुट्टी पाकर चमनलाल घर लौट रहा था। स्कूल और घर के बीच घना जंगल है। उस जंगल के बीच से ही चमनलाल के घर का रास्ता है। बारह वर्षीय चमनलाल अपने रास्ते से परिचित है। इसलिए उसे जंगल से गुजरते समय भय नहीं लगता।

उस दिन भी चमनलाल निडर भाव से जा रहा था। वह अकेला न था। उसके साथ गांव के ही दो छोटे बच्चे भी थे। वे भी स्कूल से लौट रहे थे। अचानक उन्होंने देखा कि भेड़ियों का एक झुंड आपस में लड़ रहा है। खतरा सामने देखकर चमनलाल दबे पांव बच्चों को साथ लिये आगे बढ़ने लगा। लेकिन एक भेड़िये ने उन्हें देख लिया। वह उनकी ओर लपका।

चमनलाल समझ गया कि अब डरने से काम नहीं चलेगा। सबसे ज्यादा खतरा था—दोनों छोटे बच्चों के लिए। चमनलाल ने तुरंत दोनों बच्चों को अपने पीछे छिपा दिया। उसने सोचा—इससे पहले कि भेड़िया उस पर हमला करे, क्यों न वह पहले ही उससे जा भिड़े। इससे दोनों छोटे बच्चों को बचाना भी सरल था।

अब भेड़िया चमनलाल के निकट आ चुका था। वह जैसे ही झपटा कि चमनलाल उसके आगे के पैर मजबूती से पकड़कर उन्हें तोड़ने लगा। भेड़िया खूंख्वार हो चुका था। वह चमनलाल को घायल करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा था। उधर चमनलाल भी उसे यूं आसानी से नहीं जाने देना चाहता था। घबराये हुए दोनों बच्चे जोर-जोर से चीखकर रो रहे थे। उनकी चीख-पुकार सुनकर कुछ राहगीर आ गये। उन्होंने चमनलाल और भेड़िये का भयानक युद्ध देखा। वे भी भेड़िये पर टूट पड़े और उसे मार भगाया।

चमनलाल यद्यपि बहुत घायल हो गया था, किंतु उसने जिस साहस और वीरता से भेड़िये से टक्कर ली, उसकी प्रशंसा शब्दों में करना कठिन है। उसके साहस के फलस्वरूप ही दोनों छोटे बच्चों की जान बची थी।

चमनलाल के साहस और वीरता-भरे इस कार्य के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे राष्ट्रीय पुरस्कार दिया है—जो 'संजय चोपड़ा' पुरस्कार के नाम से दिया गया है। पाठकों को दिल्ली के साहसी बालक संजय चोपड़ा की कहानी याद होगी।

मौत के मुंह से छीन लिया

मध्यप्रदेश के दुर्ग जिले में एक स्थान है केलाबाड़ी। वहां से गांव के लोगों का एक समूह पास के एक गांव भालाग्राम की ओर जा रहा था। उस दिन भालाग्राम में भजन-कीर्तन का आयोजन था। ग्रामवासियों का यह समूह उसी आयोजन में हिस्सा लेने जा रहा था। समूह में चार स्त्रियां थीं और छह बच्चे।

रास्ता लंबा था। सभी अपनी-अपनी बातों में उलझे हुए थे। रास्ते के बीच में रेलवे लाइन भी पड़ती थी। बातों का उलझाव कुछ ऐसा था कि किसी को भी ध्यान न रहा कि वे कब रेलवे लाइन पर पहुंच गये। दुर्भाग्यवश उस समय रेलगाड़ी आ रही थी। रेलवे लाइन पार करते समय इसका ध्यान किसी को न रहा कि रेलगाड़ी भी आ सकती है। जबकि स्थिति यह थी कि रेलगाड़ी बिलकुल निकट दिखाई दे रही थी। सब लोग घबरा गये, लेकिन तेरह वर्षीय बालक शत्रुघ्नलाल ने चिल्लाकर उन्हें सावधान किया। वह केवल चार वर्षीय एक लड़की का हाथ पकड़े था। उसके साथ वह एक दूसरी लड़की को लेकर झपटकर निकल गया। पलक झपकते रेलगाड़ी धड़धड़ाती हुई निकल गयी। शेष सात लोग रेलगाड़ी के नीचे आ चुके थे। शत्रुघ्नलाल ने जिस साहस और फुर्ती से काम किया, उससे दो बालिकाओं के प्राणों की रक्षा हो गयी। शत्रुघ्नलाल ने दो लड़कियों को मौत के मुंह से छीनकर जिस साहस का परिचय दिया, उसके लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया है।

लड़कियों की जान बचायो

सुक्को बाई एक साधारण-सी गांव की लड़की है। उसकी उम्र करीब नौ वर्ष है। वह मध्यप्रदेश के मंडला जिले में छिबला टोला गांव के निवासी श्री छतरसिंह की बेटी है। वह छोटी है, लेकिन बहुत साहसी और होशियार है।

घटना 14 मार्च, 1979 की है। नदी किनारे के मैदान में सुक्को बाई अपने मवेशी चरा रही थी। सुक्को बाई अपनी धुन में मस्त थी। नजर उठाकर मवेशियों को देख लेती कि कहीं वे दूर तो नहीं चले गये। फिर कभी नदी की ओर देख लेती। कुछ लोग नहा रहे थे। बड़े भी थे, बच्चे भी थे।

इसी सबके दौरान जब सुक्को बाई ने एक बार नदी की तरफ देखा तो उसका दिल धक् से रह गया। उसने देखा—दो लड़कियां नहा रही हैं—नहीं···नहीं···वे तो डूब रही हैं! अगर जरा भी देर हुई तो दोनों डूब जायेंगी।

सुक्को बाई छोटी जरूर है, लेकिन बहुत चुस्त और निडर है। वह बिजली जैसी गति से भागी और नदी में कूद गयी। तेजी से तैरती हुई दोनों लड़कियों के पास पहुंची। दोनों को उसने सहारा दिया। फिर दोनों को लेकर किनारे आयी। डूबते हुए व्यक्ति को बचाने में कई बार बचाने वाला खुद भी खतरे में पड़ जाता है। किनारे पर खड़े जो लोग तमाशा देख रहे थे, उनके लिए वह चुनौती बन गयी थी।

इस प्रकार सुक्को बाई ने अपनी जान खतरे में डालकर दो लड़कियों के प्राण बचाये।

सुक्को बाई के साहस और वीरता के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे राष्ट्रीय पुरस्कार दिया है।

भाई की रक्षक बहन

घटना मुरादनगर की है। गंगा-नहर के किनारे कुछ लोग पिकनिक के लिए गये थे। इनमें बड़े और बच्चे सभी थे। जैसा कि होता है—पिकनिक में सब लोग मौज-मस्ती में रहते हैं। फिर बच्चों को तो पूरी छूट मिल जाती है। बड़े लोग अपने समूह में होते हैं, बच्चों का दल इधर-उधर खेल-कूद में जुट जाता है। वहां भी कुछ ऐसा ही था। बच्चे नहर के किनारे पहुंच गये। खेल-खेल में भला किसका किसे ध्यान रहता है। अचानक सात वर्षीय बालिका संध्या ने देखा कि उसका तीन वर्षीय भाई नहर के किनारे बनी मेड़ पर से फिसल रहा है। दरअसल वह मेड़ पर दौड़ रहा था। उसका पैर फिसल गया और वह संभल न सका। जब तक संध्या कुछ सोचे, उसका भाई नहर के पानी में जा गिरा। वह पानी के बहाव के साथ बहने लगा। अन्य बच्चे घबरा गये।

संध्या ने इस समय एक पल भी खोना ठीक न समझा। वह तुरंत पानी में कूद गयी। उसने किसी तरह अपने भाई को पकड़ लिया, ताकि वह आगे न बहने पाये। आगे पानी का बहाव तेज था और खतरा ज्यादा था। उसने मदद के लिए साथियों को पुकारा। उसके साथी भी पानी में कूदे और इस तरह संध्या अपने भाई को बचाने में सफल हुई। संध्या के साहस के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे राष्ट्रीय पुरस्कार दिया है।

डूबते को तिनके का सहारा

पिछले वर्ष अप्रैल को घटना है। तेरह वर्षीय बालक विनय स्कारिया मरिमला नदी के तट पर खड़ा था। नदी-किनारे सभी कुछ सामान्य था। लोग नहा रहे थे, कपड़े धो रहे थे। बालक विनय ने देखा कि एक ओर तीन व्यक्ति नहा रहे हैं। उन्हें देखकर विनय को भला क्यों आश्चर्य होता! किन्तु उस समय जरूर आश्चर्य हुआ, जब उसने देखा कि उनमें से एक व्यक्ति डूब रहा है। विनय को इससे भी अधिक आश्चर्य तब हुआ, जब उसने देखा कि डूबते हुए उस व्यक्ति की रक्षा के लिए कोई आगे नहीं बढ़ रहा है।

विनय ने अपनी जान की परवाह न की। वह तत्काल नदी में कूद गया। डूबने वाला व्यक्ति निश्चित ही तैरना नहीं जानता था। फिर वह विनय से उम्र में काफी बड़ा था। उसे डूबते से बचाना स्वयं विनय के लिए जोखिम-भरा काम था। फिर भी विनय ने बड़े साहस से काम लिया। उसने उस व्यक्ति के सिर के बाल पकड़े, उसे किसी तरह किनारे तक खींच लाने में सफल हो गया। विनय के साहस के फलस्वरूप ही उस व्यक्ति की जान बच सकी थी। विनय के इस साहसपूर्ण कार्य के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे राष्ट्रीय पुरस्कार दिया है।

साहसी सतीश

आधी रात का समय था। अचानक गोलियों की आवाज गूंज उठी। गहरी नींद से जागे हुए लोग एक क्षण के लिए परेशान हो उठे। वे समझ न सके कि यह कोई सपना है या सचमुच कहीं गोली चल रही है। लेकिन फिर कुछ ही क्षणों में पता लग गया। वे गोलियां डाकुओं ने चलायी थीं। डाकुओं की बात सोचते ही सबके मन भय से भर उठे। अंधेरी रात। खूंख्वार डाकुओं द्वारा गांव पर हमला। कितनी भयानक स्थिति रही होगी!

यह घटना 18 फरवरी, 1980 की है। सहारनपुर (उत्तरप्रदेश) के निकट रामनगर गांव है। इस गांव में एक हरिजन बस्ती है। इस बस्ती में मामचंद के घर पर उस रात डाकुओं ने डाका डाला था। डाकुओं ने अपना आतंक जमाने के लिए आते ही गोलियां चलायी थीं, सचमुच लोग भयभीत तो हो गये थे; पर इस तरह हार मान लेना भी तो ठीक न था।

मामचंद के घर से लगा हुआ जो दूसरा घर है, उसमें बैठा एक तेरह वर्षीय हरिजन बालक भी जाग चुका था। उसके घर के सभी लोग घबराये हुए और परेशान थे। कहीं डाकू उनके घर पर भी आ गये तो? किंतु वह बालक सतीशकुमार जैसे मन-ही-मन कोई योजना बना रहा था।

आखिर वह घर से बाहर निकला। उसने डाकुओं की गोलियों की कोई परवाह न की। वह तो चाहता था कि डाकू अब यहां से वापस न जाने पायें।

सतीश अंधेरे में छिपता हुआ कई घरों में गया और लोगों को डाकुओं का मुकाबला करने के लिए तैयार करने लगा। समय कम था। डाकुओं की संख्या ज्यादा थी। फिर निहत्थे ग्रामवासी डाकुओं से भला कैसे टक्कर ले सकते थे? किंतु सतीश का साहस देखकर वे उसका साथ देने के लिए तैयार हो गये।

धीरे-धीरे ग्रामवासियों ने मामचंद का घर घेर लिया। डाकू मामचंद के घर से लगातार गोलियां बरसा रहे थे। कठिनाई यह थी कि ग्रामवासियों के पास रोशनी का साधन न था। वे यह नहीं देख पा रहे थे कि डाकू कितने हैं और किस जगह से छिपकर गोली चला रहे हैं। दूसरी ओर डाकुओं के पास टॉर्च थी। वे उसकी रोशनी बाहर फेंककर गोलियां बरसा रहे थे। गांव के लोगों ने मोर्चा तो बना लिया था, किंतु अभी आक्रमण का अवसर नहीं मिल रहा था।

इधर साहसी सतीश दबे पांव मामचंद के घर की दीवार पर चढ़ गया। वहां से वह उस घर के छज्जे पर जा पहुंचा। उसने अंधेरे में हो रही हरकत को देखकर वहां डाकुओं के होने का अंदाज लगा लिया। फिर उसने एक ईंट उठाकर ठीक निशाने पर मारी। ईंट डाकू को तो नहीं लगी, लेकिन एक बंदूक पर लगी और वह बंदूक दो टुकड़े हो गयी।

अब तो डाकू दल जैसे बौखला उठा। उसने अंधाधुंध गोलियां बरसायीं। गांव के लोग परेशान थे कि क्या करें ? वे किसी तरह गोलियों की मार से सावधान होकर मोर्चा लगाये हुए थे।

बालक सतीश ने अब एक उपाय सोचा। उसने डाकुओं की टॉर्च की राशनी को देखकर अनुमान लगाया कि वे कहां पर हैं। बस, वह चुपचाप नीचे आया। घास का एक बड़ा-सा गट्ठर लाया। उसे लेकर एक टूटी दीवार के सहारे चढ़ा। अब उसने घास के गट्ठर में आग लगा दी और उसे फुर्ती से उधर फेंक दिया, जहां डाकू जमा थे।

आग लगने से जो उजाला हुआ, उसमें गांववालों ने डाकुओं को अच्छी तरह देख लिया। लेकिन दूसरे ही क्षण डाकुओं ने बालक सतीश को निशाना बनाया। सतीश की आंख के पास एक गोली लगी। वह घायल तो हो गया, पर उसने साहस न छोड़ा। उसका साहस देखकर गांव वालों ने डाकुओं पर ईंट और पत्थरों की वर्षा की। डाकुओं का सरदार घटनास्थल पर ही मारा गया। कुछ डाकू भाग गये और कुछ घायल हुए।

इस मुठभेड़ में सतीशकुमार ने अपनी एक आंख जरूर खो दी, लेकिन उसने अपनी जान पर खेलकर जो बहादुरी दिखायी, उसके लिए सारा गांव उसकी प्रशंसा करता है।

बालक सतीश के इस साहसिक कार्य के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे 'संजय चोपड़ा राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार' से सम्मानित किया है। बहादुर बच्चों को ऐसे सम्मान मिलने भी चाहिए।

साहसी बालिका : मोनिका मल्होत्रा

एक जमाना था, जब ऐसी अफवाहें फैला करती थीं कि 'लकड़सुंघवा' आया हुआ है। इस अफवाह को सुनते ही मां-बाप अपने बच्चों को घर से बाहर निकलने नहीं देते थे। फिर भी भोले बच्चों को बहकाने वालों की कमी नहीं रही। कोई साधु का वेश बनाकर, कोई खरगोश दिखाकर या बहकाकर बच्चों को ले गया, ऐसी खबरें आज भी पढ़ने को मिलती हैं।

उस दिन भी यही हुआ, जब मोनिका अपने घर के पास खेल रही थी। बालिका मोनिका की उम्र छह साल है और वह अंबाला के केंद्रीय विद्यालय नंबर 1 की छात्रा है। वह अंबाला के सिकलीगढ़ मुहल्ले में रहती है।

मोनिका मल्होत्रा की एक सहेली भी है—रीतू। उसकी उम्र तीन साल है। उस दिन मोनिका अपने खेल में मस्त थी। कुछ ही दूर पर रीतू भी खेल रही थी। खेल के दौरान मोनिका ने दूर से एक साधु को आते देखा। न जाने क्यों एक क्षण के लिए उसके मन में उस साधु के बारे में शंका हुई। फिर उसने सोचा कि होगा कोई। अपने रास्ते जा रहा है, तो जाने दो। वह अपने खेल में लग गयी। साधु कब उसके निकट आया और कब वह आगे बढ़ गया, मोनिका को इसका खयाल ही न रहा। किंतु उसने खेलते-खेलते जैसे ही रीतू की तरफ देखा, तो वह वहां न थी।

क्या रीतू खेल खत्म कर घर चली गयी ? या यह साधु उसे···? मोनिका का दिमाग एक क्षण के लिए चक्कर खा गया। उसने देखा कि साधु कुछ ही दूर पर बड़ी तेजी से भागे जा रहा है।

उसने जोर से आवाज दी, "साधु महाराज, रुक जाओ।"

साधु ने एक बार मुड़कर देखा और तेजी से भागा। मोनिका ने अब देख लिया था कि साधु रीतू को चुराकर भाग रहा है।

मोनिका जोर-जोर से चिल्लाती हुई भागी, "पकड़ो बदमाश को···यह रीतू को लेकर भाग रहा है···पकड़ो इसे···यह लड़की चुराकर भाग रहा है।"

छह वर्षीया मोनिका को आते देखकर साधु तेजी से भागने लगा। वह तो वैसे ही काफी आगे निकल चुका था। फिर मोनिका बेचारी उससे दौड़ में भला कैसे जीतती ! पर वह रीतू को उसके चंगुल से हर कीमत पर छुड़ाना चाहती थी।

मोनिका चिल्लाती हुई भाग रही थी। तभी एक रिक्शेवाला मिला। मोनिका ने उसे सारी बात बतायी। रिक्शेवाले ने उस साधु को देखा। बोला, "घबराओ मत! आओ, बैठो मेरे रिक्शे में।"

अब रिक्शेवाला और मोनिका उस साधु के पीछे लग गये। आखिर कुछ दूर तक पीछा करने पर उन्होंने साधु को पकड़ लिया। उसने रीतू को दबोच रखा था। रीतू को उससे छुड़ाकर साधु को पकड़ लिया गया।

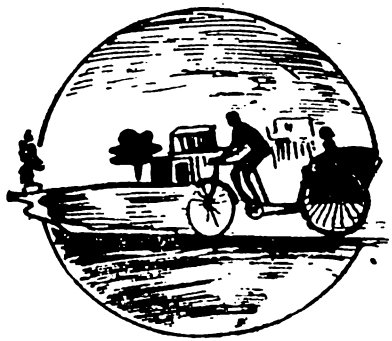

मोनिका ने जिस साहस और चतुराई के साथ अपनी सहेली रीतू का अपहरण होने से बचाया, उसके लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे 'साहस के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार' (गीता चोपड़ा पुरस्कार) से सम्मानित किया है।

84229

निर्भीक सोनिया सिनहा का कमाल

कभी-कभी छोटी-सी भूल बड़ी विपत्ति का कारण बन जाया करती है। पटना में 4 अप्रैल, 1980 को एक ऐसी ही दुर्घटना हुई। बेरिंग रोड स्थित श्रीकृष्णपुरी के अपने घर में डॉ० सिनहा और उनकी पत्नी रसोईघर में थे। उन्हें पता न था कि रसोईघर में रखे गैस सिलिंडर से गैस निकलकर फैल रही है। अचानक गैस ने आग पकड़ ली, कमरा जल उठा। डॉ० सिनहा और उनकी पत्नी उस समय मुसीबत की लपेट में आ चुके थे।

उनकी ग्यारह वर्षीया बेटी सोनिया सिनहा उस समय बाहर थी। घर में लगी आग देखकर वह एक क्षण के लिए सहम गयी, लेकिन दूसरे ही क्षण उसे अपने छोटे भाई और बहन का ध्यान आया। उसने सोचा कि वे तो भाग भी नहीं सकेंगे और मुसीबत में पड़ जायेंगे। आग फैल रही थी और चारों ओर धुआं छा रहा था। सोनिया ने सोचा कि चाहे कुछ हो, उसे अपने भाई-बहन की जान बचानी ही होगी।

जलते हुए मकान में सोनिया बड़ी निर्भीकता से घुस गयी। उसने अपने दोनों भाई-बहनों को खोजा और उन्हें लेकर सुरक्षित स्थान पर आ गयी। इसमें सोनिया ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी। अपने भाई-बहन को बचाने में खुद भी घायल हुई।

लेकिन अभी तो सोनिया को एक और लड़ाई लड़नी थी। घायल सोनिया को अस्पताल में भरती किया गया। हालत बेहद गंभीर और चिंताजनक थी, किंतु सोनिया हार मानने वाली नहीं थी। अब उसने अपनी मुसीबत से जूझकर अपनी जीवन-रक्षा का संघर्ष शुरू कर दिया था। सोनिया को तीन महीने तक 'इंटेंसिव केयर यूनिट' में रखा गया और डॉक्टरों ने हर क्षण उसकी लड़ाई में साथ दिया। आखिर सोनिया ठीक हो गयी। वह जीत गयी। आग की दुर्घटना में उसके पिता का देहांत हो चुका था, फिर भी सोनिया ने अपने भाई-बहन को आग की लपटों से बचाने का सराहनीय कार्य तो किया ही था।

पलक झपकते ही डूबती नाव को बचाया

साहस और निर्भीकता किसी में नहीं होती, यह सोचना गलत है। वास्तव में जरूरत इस बात की होती है कि मुसीबत के क्षणों में कौन अपने साहस का प्रयोग कितनी समझदारी और चतुराई से कर सकता है। एक ऐसे ही बालक पंपाभाई माछी ने 13 जून, 1980 को जिस चतुराई, साहस और निर्भीकता का परिचय दिया, उसे देखकर लोग हैरान रह गये।

बालक पंपाभाई गुजरात में खेड़ा जिले के अंतर्गत बरसाड तालुका के अमरोल गांव का निवासी है। उस दिन अमरोल से एक नाव में तीस लोग सिंगरोट जा रहे थे। शाम के छह बजे थे। पंपाभाई भी उसी नाव में सवार था। अचानक पानी की एक लहर इतनी तेजी से आयी कि नाव संभल न सकी। नाव के उलटते ही सभी लोग पानी में गिर गये। चारों ओर हाहाकार मच गया।

पंपाभाई तैरना जानता है। उसने देखा कि किनारे पर एक नाव खड़ी है, किंतु उसमें चप्पू नहीं हैं। अगर वह नाव किसी तरह तुरंत लायी जा सके, तो काफी लोग बच सकते हैं। पंपाभाई के मस्तिष्क में बिजली की तरह एक विचार आया। उसने पलक झपकते ही उलटी हुई नाव का एक चप्पू निकाल लिया। फिर बड़ी तेजी से तैरता हुआ नदी के किनारे आया। उसने वह दूसरी नाव ली और डूबते हुए लोगों को बचाने के लिए चल दिया।

डूबते हुए लोगों को बचाकर नाव में बैठाना भी अत्यंत खतरनाक काम था। नाव फिर उलट सकती थी और बचाव का जो एकमात्र साधन था, वह भी नष्ट हो सकता था, किंतु पंपाभाई ने उस समय अपने जीवन की कोई परवाह न की। वह डूबने वालों को बचाने में जुट गया। आखिर उसने सत्ताईस लोगों के प्राण बचा लिये।

पंपाभाई के इस साहस-भरे काम से प्रसन्न होकर गुजरात के मुख्यमंत्री ने उसे पांच सौ एक रुपये का नकद पुरस्कार भी दिया।

घने जंगल और अंधेरी रात में भी अमरीदेवी अकेली नहीं घबराई

घना जंगल हो, अंधेरी रात हो, भयानक जानवरों का खतरा हो, बीच-बीच में जानवरों की आवाज गूंज उठे; ऐसे में अकेले और बिना किसी हथियार के यदि कोई शिकारी भी हो, तो उसका दिल दहल जायेगा। लेकिन यदि मन में साहस हो, तो ऐसे खतरनाक और मुसीबत-भरे मौके पर भी हम विजय पा सकते हैं। विश्वास इसलिए भी करना होगा कि एक सात वर्ष की लड़की ने अपने साहस की एक ऐसी ही मिसाल कायम की है।

हिमाचलप्रदेश के किन्नौर जिले के चागांव में श्री काकरसिंह नेगी रहते हैं। उनकी बेटी अमरीदेवी अपनी बहन के साथ जंगल में मवेशी चराने गयी थी।

उस दिन अमरी और उसकी बहन ने मवेशियों को दो हिस्सों में बांट लिया था। दोनों के मवेशी जंगल में चर रहे थे। वे दोनों साथ-साथ घूम रही थीं। घने जंगल के बीच रहकर भी दोनों बहनों के मन में कोई भय न था। अमरी की बहन ने अचानक देखा कि उसके झुंड के कुछ मवेशी जंगल में इधर-उधर भटक गये हैं। उसने अमरी से कहा कि तू यहीं बैठ, मैं अभी जानवरों को हांककर लाती हूं। उस समय उनका पालतू कुत्ता भी साथ था। अमरी अपनी जगह पर ही बैठी रही।

जब काफी देर तक अमरी की बहन न लौटी, तो उसे फिकर हुई। उसने बहन को कई आवाजें दीं, पर कोई उत्तर न मिला। सात वर्ष की बालिका अमरी कुछ समझ न पायी कि उसकी बहन कहां गयी। अमरी उठी और अपनी बहन को ढूंढ़ने घने जंगल में घुस गयी।

धीरे-धीरे शाम हो चली। अमरी भटकते-भटकते थक चुकी थी। साथ ही वह रास्ता भी भूल गयी थी। परेशानी में उसे याद ही न रहा कि वह किधर और कितनी दूर निकल आयी है। इधर रात होने लगी और अमरी घर लौटने के लिए इधर-उधर भटकने लगी। आखिर जब रास्ता न मिला, तो उसने बड़ी निडरता से एक पेड़ पर रात गुजारी और सवेरा होते ही वह जंगल में फिर भटकने लगी। दूसरा दिन भी बीत गया और दूसरी रात आ गयी। भूखी-प्यासी अमरी थककर चूर हो चुकी थी, लेकिन उसकी हिम्मत और साहस कम नहीं हुआ। अब फिर रात आ गयी और अमरी ने उसे भी निडर होकर बिताया।

तीसरे दिन सुबह अमरी फिर से जंगल में भटकने लगी। वह आवाज लगाती, तो कहीं से जवाब न मिलता। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कैसे यहां से बाहर निकले।

अचानक वह जंगल के बीच से होते हुए एक सड़क पर आकर खड़ी हो गयी। वह राष्ट्रीय

मार्ग 22 था। अमरी ने सोचा, यह रास्ता जरूर किसी बस्ती को जायेगा। साथ ही इस पर चलने वाले कुछ यात्रियों से भी भेंट होगी। इसी आशा से अमरी आगे बढ़ी। कुछ ही दूर पर उसे लोग मिले। संयोग से वे अमरी के गांव के थे। उन्होंने अमरी की कहानी सुनी, तो उसके साहस को देखकर हैरान रह गये। उन्होंने अमरी को तुरंत घर पहुंचाया, जहां उसकी बहन मवेशी लेकर आ चुकी थी। अमरी के गायब हो जाने से घर के लोग बेहद दुखी और परेशान थे। जब उन्होंने अमरी की साहस-भरी कथा सुनी, तो सब बड़े प्रसन्न हुए।

कुएं में डूबने से बचाया

मध्यप्रदेश के दमोह जिले का कैथोरा गांव। 16 जनवरी, 1978 को तीन वर्ष का एक बालक अचानक कुएं में गिर गया। उस बालक को कुएं में गिरता देखकर एक बूढ़ी औरत बहुत घबरा गयी। उसे कुछ न सूझा तो वह बच्चे को बचाने के लिए खुद कुएं में कूद गयी। कुएं में पानी काफी था। महिला ने उस बालक को बचाना तो चाहा, लेकिन खुद तैर न सकी।

संयोगवश उसी समय बारह वर्षीय बालक रामेश्वरप्रसाद उधर से निकला। बूढ़ी महिला और वह तीन वर्षीय बालक मौत से जूझ रहे हैं। अगर तत्काल उनकी सहायता न की गयी तो वे मौत की चपेट में आ जायेंगे। बस, यह विचार आते ही बालक रामेश्वरप्रसाद कुएं में कूद गया। उसने बच्चे और बूढ़ी औरत को सहारा दिया। जिस साहस और सूझबूझ से रामेश्वरप्रसाद ने उन दोनों को बचाया, उसकी सबने प्रशंसा की। गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल, कैथोरा की सातवीं कक्षा के छात्र रामेश्वरप्रसाद को भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसके साहस के लिए पुरस्कृत किया है।

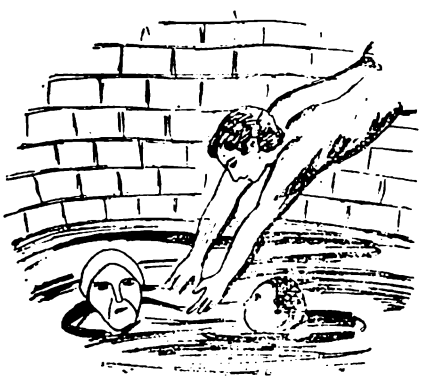

दो भाइयों का तेंदुए से मुकाबला

कर्नाटक प्रदेश के उत्तरी कनारा जिले में उप्पलकोप्पा के निवासी दो भाई श्रीपाद और राघव भी अमरी जैसे ही निडर और साहसी बच्चे हैं। वे जंगल में प्रायः लकड़ियां काटने जाते हैं। अपने गांव के पास ही जंगल होने के कारण उन्हें सुविधा से जलने वाली लकड़ी मिल जाती है। 25 अप्रैल, 1980 को भी वे जंगल में लकड़ियां काटने गये थे। अचानक उन्होंने किसी जानवर की आवाज सुनी। जंगल में जानवरों से डर तो लगता है, किंतु दोनों भाई जानवरों के खतरे से निश्चित थे। उस आवाज को सुनकर उन्होंने सोचा कि शायद भालू होगा। आवाज नजदीक थी, इसलिए उन्होंने शोर मचाकर उसे भगाने की कोशिश की। होता भी यही है कि आमतौर से जानवर आदमियों की आवाजें सुनकर भाग जाते हैं, पर उस दिन ऐसा नहीं हुआ।

श्रीपाद ने अचानक देखा कि कोई डेढ़ मीटर लंबा तेंदुआ राघव के ऊपर झपट पड़ा है। यह सब बिलकुल पलक झपकते हुआ था। राघव जोर से चीखा—'बचाओ···बचाओ···'

श्रीपाद इतने बड़े तेंदुए को देखकर एक क्षण के लिए सहम गया, लेकिन तभी उसने सोचा कि यह तेंदुआ उस पर भी हमला करेगा। इसलिए भाई को बचाने के लिए कुछ करना ही होगा।

श्रीपाद ने बड़ी फुर्ती से एक मजबूत मोटा डंडा उठाया। फिर क्या था, वह पूरे साहस से तेंदुए पर टूट पड़ा। उसे डंडे से इतना मारा, इतना मारा कि आखिर तेंदुआ जख्मी होकर जंगल के अंदर भाग गया। उसने राघव को घायल तो कर दिया था, किंतु श्रीपाद ने उसे भी डंडे की मार से ऐसा मजा चखाया था कि वह भी याद करेगा कि किसी साहसी बालक से पाला पड़ा था।

पांच वर्ष की लड़की ने एक वर्ष के भाई को आग से बचाया

मथुरा के तेलशोधक कारखाने के पास एक गांव है—गोपालपुर। 4 अक्तूबर, 1979 की बात है। इस गांव में बनी कोई दस झोंपड़ियों में अचानक आग लग गयी। पांच वर्षीया श्यामा शर्मा वहीं खेल रही थी। उसकी झोंपड़ी में भी आग लग चुकी थी। श्यामा के माता-पिता उस समय वहां न थे, किंतु श्यामा का एक वर्षीय छोटा भाई झोंपड़ी के अंदर ही था। श्यामा ने जब झोंपड़ी में आग देखी, तो वह अपने छोटे भाई के लिए चिंतित हो उठी। वह हिम्मत करके जलती हुई झोंपड़ी में घुस गयी। अपने भाई को उठाकर वह निकल रही थी, पर चारों तरफ आग-ही-आग थी। फिर भी उसने बड़ी सावधानी से रास्ता बनाया और बाहर निकल आयी। इस काम में उसे कुछ चोटें भी आयीं और वह कई जगह से जल भी गयी, लेकिन साहस के कारण वह अपने भाई को बचाने में सफल हो गयी।

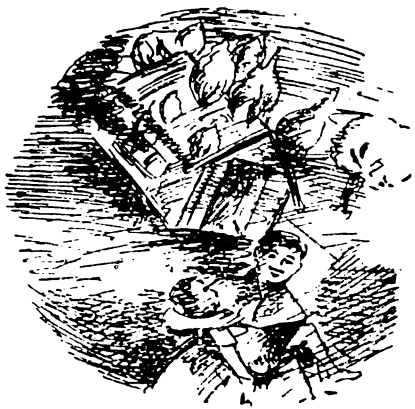

आखिर बाढ़ से उसे बचा ही लिया

मदन परमार हिमालयप्रदेश के हमीरपुर जिले में ग्राम कोठारली का रहने वाला है। पंद्रह वर्षीय मदन बड़ा ही मेहनती है। घटना 14 जून, 1980 की है। उस दिन भारी वर्षा हुई थी। मनखद नदी में बाढ़ आयी हुई थी। पास के गांवों से कुछ लोग लकड़ियां काटने आये थे। इन्हीं लोगों में एक व्यक्ति था, होशियारसिंह। यह नौजवान न जाने कैसे बाढ़ की चपेट में आ गया था। बाढ़ का पानी उसे करीब एक किलोमीटर तक बहाकर ले गया। होशियारसिंह को इस तरह बहते देखा मदन परमार ने। वह उस समय अपने मवेशी चरा रहा था।

बालक मदन ने होशियारसिंह की हालत देखते ही समझ लिया कि उसे मदद की जरूरत है। मदन ने यह भी देखा कि बाढ़ के पानी में बिजली जैसी तेजी है और लपलपाती हुई पानी की लहरें कुछ भी कर सकती हैं। मदन परमार ने सोचा कि जो भी हो, डूबते हुए को तो बचाना ही होगा। उसने पूरे साहस से बाढ़ के पानी का मुकाबला करने का निश्चय किया।

अब मदन परमार पानी में कूद चुका था। पानी की लहरें उसका रास्ता रोकने लगीं। तेज बहाव के बावजूद वह पूरी गति से आगे बढ़ने लगा। वह जल्दी-से-जल्दी होशियारसिंह के पास पहुंचना चाहता था।

आखिर मदन ने अपने संघर्ष की पहली मंजिल जीत ली, लेकिन दूसरे ही क्षण उसका संघर्ष बढ़ गया। डूबते हुए व्यक्ति को लेकर किनारे पर आना और पानी की तेज धारा से मुकाबला करना काफी कठिन काम था। बालक मदन परमार अब किसी भी तरह हारना नहीं चाहता था। उसने इस संघर्ष में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। वह डूबते हुए होशियारसिंह को पकड़कर खींचने लगा। काफी देर तक संघर्ष करने के बाद वह होशियारसिंह को किनारे ले आया। उसे उलटा लिटाकर, उसके पेट का पानी निकाला और अपना कर्तव्य पूरा किया।

उस दिन सुधीर देर से स्कूल पहुंचा

शाम होने वाली थी। सुधीर रीलकर स्कूल से लौट रहा था। उसने दूर से देखा कि एक झोंपड़ी के पीछे से कुछ धुआं उठ रहा है। उसने पहले इस बात पर ध्यान नहीं दिया। सोचा, शायद कोई खाना पका रहा होगा। अभी वह कुछ आगे ही बढ़ा था कि उसे धुआं काफी तेजी से उठता दिखाई दिया।

झोंपड़ी के अंदर से धुआं निकलते देख उसे कुछ संदेह हुआ। वह तेजी से कदम बढ़ाता हुआ झोंपड़ी की तरफ बढ़ने लगा। उसका अनुमान सही था। झोंपड़ी में आग लग गयी थी। तभी उसने झोंपड़ी के अंदर से कुछ बच्चों के रोने की आवाजें सुनीं।

'तो क्या झोंपड़ी के अंदर बच्चे भी हैं ?' यह प्रश्न मन में आते ही सुधीर एकदम सावधान हो गया। उसने आसपास देखा, तो मदद के लिए कोई न था। सुधीर ने स्वयं ही उन बच्चों को बचाने का निश्चय किया।

सुधीर ने अपना बस्ता एक ओर रखा और झोंपड़ी के अंदर घुस गया। धूएं और आग की गर्मी से झोंपड़ी का बुरा हाल था। बच्चे घबराहट से चीख रहे थे। सुधीर ने देखा कि दो बच्चे छोटे हैं और एक बड़ा। उसने पहले बड़े बच्चे को उठाया और आग से बचते हुए बाहर लेकर आया। उसे सुरक्षित स्थान पर छोड़कर वह फिर झोंपड़ी की तरफ लपका। आग बढ़ने के साथ-साथ खतरा भी बढ़ रहा था, लेकिन सुधीर ने अपना साहस न छोड़ा। वह हर कीमत पर उन दोनों बच्चों को भी लाना चाहता था। सुधीर एक बार फिर झोंपड़ी के अंदर घुस गया। उसने दोनों छोटे बच्चों को उठाया और तेजी से बाहर निकल आया। यह कैसा संयोग था कि जिस क्षण सुधीर बाहर आया, उसके दूसरे ही क्षण वह जलती झोंपड़ी ढह गई और चारों ओर आग की लपटें धधक उठीं।

सुधीर के साहस के कारण ही उन तीनों बच्चों की जान बच सकी थी। दरअसल उस समय घर के मालिक किसान दंपती खेत पर काम करने गये थे। पड़ोस में जो एकमात्र महिला थी, वह पानी भरने गयी थी। उसका भी बेटा उस झोंपड़ी में ही था। यह तो अच्छा हुआ कि सुधीर जैसा साहसी बालक ठीक समय पर पहुंच गया और तीनों बच्चों को मौत के मुंह से निकाल लाया। अगर कुछ मिनटों की देर हो जाती, तो वे बच्चे उस आग से कभी न बच पाते।

कुएं में छलांग लगाकर बचाया

घर के काम में बच्चे यदि हाथ बंटाते हैं, तो अच्छी बात है, लेकिन इसमें थोड़ी सावधानी की जरूरत भी होती है। ठाणे जिले के पालघाट तालुका में कोर गांव की बालिका गीता पानी भरने गयी थी। सात वर्ष की इस बालिका ने जैसे ही पानी भरना चाहा, उसका पैर फिसल गया और वह कुएं में जा गिरी। पास ही एक बच्चा खेल रहा था। उसने गीता को कुएं में गिरते देख लिया। वह जोर-जोर से चिल्लाया, 'बचाओ···बचाओ···एक लड़की कुएं में गिर गयी।'

उस छोटे बच्चे की पुकार पंद्रह वर्षीय बालक विलास श्रीधर किनी ने सुनी। वह तुरन्त मदद के लिए दौड़ा। उसने देखा कि गीता सचमुच मुसीबत में है। वह तत्काल कुएं में कूद गया और गीता को पकड़ लिया। इस बीच आसपास के और भी लोग आ गये थे और उनकी मदद से विलास गीता को लेकर बाहर आ गया।

चौदह वर्षीय बालक सी० गोविंदन ने भी कुछ ऐसा ही साहसपूर्ण कार्य किया। घटना 3 सितंबर, 1979 की है। तमिलनाडु के धरमपुरी जिले के कुरुबरपल्ली गांव से जो राष्ट्रीय मार्ग निकलता है, वह काफी व्यस्त रहता है। बालक गोविंदन इसी मार्ग पर उस दिन पैदल कहीं जा रहा था। उसने देखा कि सड़क पर एक बूढ़ा आदमी जा रहा है। यों बूढ़े आदमी का सड़क पर चलना कोई खास बात न थी और इसीलिए शायद गोविंदन उसकी तरफ ध्यान भी न देता, किंतु उसने देखा कि सामने से एक बस तेज रफ्तार से आ रही है। उस बूढ़े आदमी को इसकी ख़बर नहीं है, यह बात उसकी चाल से गोविंदन ने समझ ली। गोविंदन ने सोचा कि एक पल की भी देर होने पर यह बूढ़ा आदमी बस के नीचे आ सकता है।

बस, उसने फुर्ती से आगे बढ़कर उस आदमी को पकड़ा और खींचकर सड़क के किनारे ले आया। दूसरे ही क्षण सनसनाती हुई बस वहां से निकल गयी। गोविंदन ने जिस फुर्ती से उस बूढ़े आदमी को मरने से बचाया था, उसकी सबने प्रशंसा की।

पेरूमल ने दो बार डूबते को बचाया

दोपहर का समय था। के० पेरूमल और उसके दो मित्र एक पोखर के किनारे खड़े थे। पोखर में दो लड़के तैर रहे थे। शंकरन नामक एक बारह वर्षीय लड़का, पोखर के किनारे खड़ा, तैरने वाले लड़कों को देख रहा था। शंकरन पोखर के इतना नजदीक था कि जरा-सी असावधानी से पानी में गिर सकता था। इस बात का अनुमान शायद शंकरन को न था। फिर उसका ध्यान तो तैरने वाले लड़कों की तरफ लगा था।

अचानक एक अन्य लड़का पीछे से दौड़ता हुआ आया। वह दरअसल इस तरह दौड़कर पोखर में कूदना चाहता था, किन्तु गलती से उसका धक्का शंकरन को लग गया। शंकरन संभल न पाया और पानी में गिर गया। शंकरन को तैरना नहीं आता था। वह डूबने लगा। पेरूमल ने शंकरन को डूबते देखा, तो दौड़कर पानी में कूद गया। उसने शंकरन को पकड़ तो लिया, लेकिन शंकरन उसके लिए मुसीबत बन गया। दरअसल शंकरन बेहद घबरा गया था। उसने पेरूमल को कसकर पकड़ लिया था। इसी कारण पेरूमल तैर नहीं पा रहा था।

यह देख उसने शंकरन के बाल पकड़ लिये और उसे खींचकर किसी तरह किनारे ले आया। चूंकि पेरूमल स्काउटिंग के नियम जानता था, इसलिए उसने शंकरन की प्राथमिक चिकित्सा भी की और इस तरह उसकी जान बचा ली।

चौदह वर्ष के इस बालक ने एक बार और अपने साहस का परिचय दिया था। हुआ यह कि सरोजा नामक एक बारह वर्षीया लड़की पानी भरने कुएं पर आयी थी। अचानक उसका पैर फिसल गया। वह कुएं में गिर गयी। संयोगवश पेरूमल ने उसे कुएं में गिरते देख लिया। वह तत्काल कुएं में कूद गया। उसने सरोजा की चोटी पकड़कर उसे पानी से बाहर निकाल लिया। इसके बाद वह बड़ी मुश्किल से उसे कंधे पर लादकर कुएं के बाहर आया। सरोजा ने काफी पानी पी लिया था। पेरूमल ने उसका प्राथमिक उपचार किया और सरोजा की जान बचा ली।

राहगीर को डाकुओं से बचाया

21 मई, 1980। धर्मदास और उनके परिवार की कुछ महिलाएं बैलगाड़ी में बैठकर किसी गांव को जा रहे थे। धर्मदास और महिलाएं आपस में बातें कर रहे थे। अचानक बीच रास्ते में दो डाकुओं ने गाड़ी रुकवा दी। डाकुओं ने धर्मदास को पहले धमकाया और माल मांगा। धर्मदास ने जब रुपया-पैसा आदि देने से इनकार कर दिया, तो डाकुओं ने उनके साथ मारपीट की। धर्मदास को चोटें आयीं। डाकुओं ने उनका सामान लूट लिया और भाग निकले।

ठीक इसी समय तीन लड़के रामसिंह, टेना और भगवंत मवेशी चरा रहे थे। हालांकि वे घटनास्थल से दूर थे, किंतु उन्होंने चीख-पुकार सुनी। उन्हें लगा कि कोई मुसीबत में है और उसे मदद चाहिए। वे तीनों लाठियां लेकर भागे और घटनास्थल पर पहुंच गये। उस समय तक डाकू जा चुके थे। सारी स्थिति समझने के बाद उन तीनों ने डाकुओं का पीछा किया। रास्ते में कुछ गांववाले भी उनके साथ हो गये। थोड़ी दूर पीछा करने पर उन्हें डाकू मिल गये। फिर तो सबने डाकुओं को इतना पीटा कि वे घटनास्थल पर ही मर गये। लूट का माल धर्मदास को लौटा दिया गया।

सहेली की जान बचायी

घटना सोनीपत (हरियाणा) की है। यहां के शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भवन का बायां भाग काफी कमजोर और बुरी हालत में था। वह कभी भी गिर सकता था, इसलिए वहां कक्षाएं नहीं लगती थीं। उसका उपयोग इतना ही था कि वहां एक कमरे में खेल-कूद का सामान रख दिया गया था।

उस दिन तेज बारिश हुई और इमारत का वह भाग ज्यादा खतरनाक हालत में हो गया। यह लगा कि अब किसी भी क्षण वह गिर सकता है। सविता देवी और उसके साथ की लड़कियों ने जब यह देखा, तो सोचा कि वहां रखा खेल-कूद का सामान व्यर्थ ही मलबे के नीचे दबकर नष्ट हो जायेगा। क्यों न हम चलकर उसे निकाल लायें? काम काफी खतरनाक था। इमारत का छप्पर बारिश के कारण कभी भी टूटकर गिर सकता था। किंतु सविता ने अपनी सहेलियों का हौसला बढ़ाया। वे खेल-कूद का सामान निकालने चली गयीं।

खेल-कूद का सामान निकाला जाने लगा। लेकिन सविता पूरी तरह चौकन्नी और सावधान थी। और जैसा कि डर था, इमारत का छप्पर चरमरा उठा। उस वक्त कमरे के अंदर सविता की एक सहेली थी। सविता तो पहले से ही सावधान थी। एक पल की देर किये बिना बिजली की तरह झपटकर सविता ने अपनी उस सहेली को बचा लिया। गिरते हुए छप्पर के नीचे अपनी जान जोखिम में डालकर सविता ने अपनी सहेली को बचाने का जो बहादुरी-भरा काम किया, उसमें उसके हाथों में काफी चोट आयी। किंतु जहां सविता की सूझबूझ से खेल-कूद का कीमती सामान नष्ट होने से बच गया, वहीं उसकी चतुराई और साहस से गिरते हुए छप्पर के नीचे दबने वाली उसकी सहेली की जान बच गयी। सविता के साहसपूर्ण कार्य के लिए भारतीय बाल विकास समिति ने उसे राष्ट्रीय पुरस्कार दिया है।

समुद्र

9

एक रात
मछुए भ
आ गये
आशा

नक आयी मुसीबत से मछलीमारों का दल घबरा उठा था। सभी
की कोशिश कर रहे थे। भयानक स्थिति थी।

एक ओर ऊंची-ऊंची समुद्र की भयंकर लहरें। ऐसी, जैसे
हो। और दूसरी ओर उनसे टक्कर ले रहे मछलीमारों की छोटी-
के बीच वे जोर-जोर से डोल रही थीं। ऐसी हालत में भला जगन
नामक दो लड़कों के ऊपर क्या बीत रही होगी, यह आसानी से सो

समुद्र की लहरें उन पर गरजती हुई झपट रही थीं। लगत
नहीं छोड़ेंगी। किंतु दोनों बहादुर लड़के मौत की उन समुद्री लहरं
लड़ते रहे। आखिर लहरों ने उनकी नावें तोड़ दीं, किंतु उनका
लड़के टूटी नावों के तख्ते पकड़े तैरते रहे और समुद्री लहरों के
करते रहे। वे कभी तो ऊपर उछल पड़ते और अगले ही पल एक
पटक देता।

जगन ने लहरों की लड़ाई के बीच अपने चाचा को भी देख
रहे थे। इसलिए जगन ने अपने चाचा की हालत पर भी पूरा ध्यान
किनारे पर आया, तो साथ में चाचा को भी ले आया।

कृष्ण भी अपने साथी पीटर को लेकर लहरों से
जूझ रहा था। दोनों ने उन मुसीबत के क्षणों में एक-दूसरे
का साथ दिया। एक-दूसरे की रक्षा की। लेकिन जब वे
तूफानी लहरों से बचकर लौट रहे थे, पीटर एक चट्टान
से टकराकर वहीं समाप्त हो गया। कृष्ण का मन दुखी
था। लेकिन संघर्ष कम नहीं हुआ था। आखिर वह
विजयी हुआ।

कृष्ण और जगन, दोनों को साहस और संघर्ष के
लिए राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया।

यामखोपाओ, जिसने शेर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये

3 अक्तूबर, 1975, बुधवार। दोपहर के दो बजे थे। मणिपुर की पेंगनोल पहाड़ियों के जंगलों में दो व्यक्ति घूम रहे थे। एक का नाम था—तोंगोपाओ कूकी, उम्र छत्तीस वर्ष। दूसरा था पंद्रह वर्षीय बालक यामखोपाओ कूकी। वे दोनों जलाने की लकड़ी इकट्ठी करने के लिए गये थे। जंगल का मामला था। खूंख्वार जानवरों का खतरा तो वहां रहता ही है। इसलिए तोंगोपाओ अपने साथ बंदूक भी ले गया था। शायद यह भी इरादा रहा हो कि लगे हाथों कोई शिकार मिल गया, तो फिर दावत उड़ेगी। यामखोपाओ के हाथ में केवल कुल्हाड़ी थी।

वे जब घने जंगल के बीच से जा रहे थे, तो अचानक नौ फीट लंबे नरभक्षी शेर से मुलाकात हो गयी। इस मुलाकात के लिए वे तैयार न थे। फिर भी तोंगोपाओ ने बड़ी फुर्ती से बंदूक संभाली। उसने निशाना साधा और बंदूक का घोड़ा दबा दिया। लेकिन पल-भर में सारा दृश्य बदल गया। बंदूक चली ही नहीं। उधर नरभक्षी शेर अवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहता था। वह भी बिजली की तरह उछला और अपने पंजों में तोंगोपाओ को दबोच लिया। तोंगोपाओ घबराकर चिल्ला उठा।

उस समय यामखोपाओ कुछ ही दूर पर था। उसने यह सारा दृश्य कुछ ऐसे देखा जैसे अचानक बिजली-सी चमकी हो। परन्तु उसने अपना साहस और धैर्य नहीं खोया। एक बार हाथ में पकड़ी कुल्हाड़ी की ओर देखा और शेर की ही तरह वह भी उस शेर पर टूट पड़ा। उसने शेर की कमर और सिर पर इतनी तेजी से और इतने भरपूर वार किये कि शेर के टुकड़े-टुकड़े हो गये। शायद शेर ने कल्पना भी नहीं की होगी कि उसे आज यामखोपाओ कूकी सवा सेर के रूप में मिलेगा। यामखोपाओ ने अपने कपड़ों से तोंगोपाओ की दाहिनी बांह पर पट्टी बांधी, क्योंकि वहां घाव गहरा था। तोंगोपाओ और भी कई जगह घायल हो गया था। यामखोपाओ ने उसे उठाया और केर्कचिंग के अस्पताल में ले आया। सोलह मील दूर स्थित इस अस्पताल तक घायल तोंगोपाओ को लाने में भी यामखोपाओ ने अपने साहस का परिचय दिया। आखिर तोंगोपाओ की जान बच गयी। यामखोपाओ कूकी को बहादुरी और साहस-भरे इस काम के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

साहस का धनी कीकरसिंह

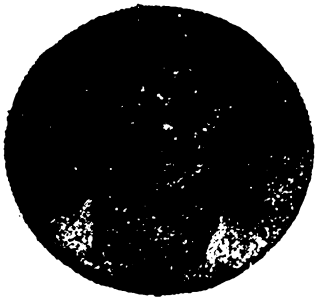

पंद्रह वर्षीय बालक कीकरसिंह रोहतक जिले के ग्राम लोवाखुर्द का निवासी है। कीकरसिंह को भारतीय बाल विकास परिषद् की ओर से साहस के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है। कीकरसिंह को यह पुरस्कार तीन साहसिक कार्यों के लिए दिया गया है।

पहली घटना 28 जनवरी, 1976 की है। कीकरसिंह अपने कपड़े धोने के लिए कुएं पर जा रहा था। उस कुएं की जगत चिकनी थी। उस पर दो बच्चे खेल रहे थे। अचानक उनके पैर फिसले और वे दोनों कुएं में गिर गये। कीकरसिंह ने उन्हें कुएं में गिरते देख लिया था। वह जोर-जोर से चिल्लाता हुआ दौड़ा और कुएं में कूद गया। इस तरह उसने दोनों बच्चों को डूबने से बचा लिया। तब तक गांव के अन्य लोग और उन बच्चों के माता-पिता भी पहुंच चुके थे। सभी ने कीकरसिंह के इस वीरता-भरे कार्य की प्रशंसा की।

दूसरी घटना 35 मई, 1976 की है। एक दिन कीकरसिंह कहीं जा रहा था। उसने अचानक देखा कि सतवीरसिंह नामक एक तेरह वर्षीय बालक बिजली की पकड़ में आ गया है। दरअसल बिजली का वह तार एक जगह से टूटा हुआ था और सतवीर ने वही हिस्सा पकड़ लिया था। कीकरसिंह विज्ञान का विद्यार्थी है। वह पलक झपकते सारी स्थिति समझ गया और उसने झपटकर मुख्य लाइन का बटन बंद कर दिया। इस तरह कीकरसिंह के प्रयास से सतवीरसिंह की जान बच गयी।

तीसरी घटना 30 जुलाई, 1976 की है। गांव में एक तालाब है, जिसकी एक ओर काफी ऊंचाई और ढलान है। बरसात के दिनों में यह तालाब लबालब भर जाता है। उस दिन कीकरसिंह तालाब के पास कुछ पौधे लगा रहा था। उसने यह भी देखा कि उस ऊंचे-ढलवां स्थान पर ग्यारह वर्षीय बालक पवनकुमार बैठा प्राकृतिक दृश्यों का आनंद ले रहा है।

कुछ देर बाद अचानक जब कीकरसिंह ने पवनकुमार की ओर नजर घुमायी तो वह वहां न था। उस समय पवनकुमार लुढ़ककर गहरे पानी की ओर जा रहा था। कीकरसिंह ने एक पल की भी देर न होने दी। वह भागकर पहुंचा और पवनकुमार को बचाने के लिए पानी में कूद गया। अगर कीकरसिंह ने उस समय यह साहसपूर्ण काम न किया होता, तो बालक पवनकुमार की जान खतरे में पड़ जाती।

राजकुमार सिंह : चोर का सुराग

उन दिनों क्रिसमय की छुट्टियां थीं। स्कूल बंद थे, इसलिए अपनी फुर्सत के समय में बालक राजकुमार सिंह रावत अपने पिता के पास प्रयोगशाला में चला जाता और वहां विज्ञान के बारे में तरह-तरह की जानकारी प्राप्त करता रहता। राजकुमार सिंह के पिता श्री डी० एस० रावत कानपुर में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी के भौतिक विज्ञान विभाग की स्पैक्ट्रम विज्ञान प्रयोगशाला में काम करते हैं।

यह घटना 30 दिसम्बर, 1972 की है, जबकि रोज की तरह बालक राजकुमार सिंह प्रयोगशाला में घूम रहा था और वैज्ञानिक प्रयोगों को देख रहा था। वह शौचालय की ओर जा रहा था कि उसने प्रयोगशाला के एक कमरे से कुछ धुआं निकलते देखा। फर्श और किवाड़ के बीच की दरार से उसने अंदर का जो दृश्य देखा, वह बड़ा ही सनसनीखेज था। एक आदमी अपने सामने ढेर सारी चिट्ठियां फैलाये बैठा था। वह उन पर लगे टिकटों को निकालकर जेब में रखता जा रहा था और चिट्ठियों को जलाता जा रहा था।

यह तो बड़ा ही खतरनाक काम कर रहा है। लोग चिट्ठियां डालकर उसके उत्तर का इंतजार करते होंगे और यहां तो चिट्ठियों का बिलकुल ही सफाया किया जा रहा है। राजकुमार सिंह ने सोचा कि इस समय एक पल की भी देरी ठीक नहीं। बस, वह जोर-जोर से चिल्लाकर लोगों को बुलाने लगा। जैसे ही संस्था के अधिकारी वहां आये, उन्होंने डाक टिकटों के इस चोर को रंगे हाथों पकड़ लिया और उसे संस्था के सुरक्षा अधिकारी को सौंप दिया गया।

बाद में पता चला कि वह व्यक्ति इस काम को काफी समय से कर रहा था और टिकटों को बेचकर धन कमाता था। ऐसे घातक और खतरनाक चोर को पकड़वाने में बालक राजकुमार सिंह ने जिस सूझ-बूझ और चतुराई का परिचय दिया, उसके लिए उसे राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मौत बगल से गुजर गयी

मध्यप्रदेश का छिन्दवाड़ा शहर, चोर फाटक रेलवे क्रासिंग, रेलगाड़ी आने वाली थी। दोनों फाटक बन्द कर दिये गये थे। फिर भी लोगों में रुककर इन्तजार करने का धीरज कहां होता है ? कुछ लोग तब भी रेल की पटरियों को पार कर आ-जा रहे थे। जब बड़े ऐसा कर रहे थे तो बच्चे भला क्यों रुकते !

अचानक तेजी से आती हुई रेलगाड़ी दिखी। लोगों ने जल्दी-जल्दी पटरियां खाली कर दीं, किन्तु एक छोटी लड़की बीच में हक्की-बक्की खड़ी थी। उसकी गोद में एक छोटा बच्चा था और एक बच्चा उसकी उंगली पकड़े था। रेलगाड़ी के इंजन और भीड़ की चीख-पुकार से वह लड़की घबरा गयी और छोटे बालक की उंगली छोड़कर पटरी के बाहर निकल गयी। रेलगाड़ी काफी नजदीक आ चुकी थी। वह छोटा बालक रेलगाड़ी को एक खिलौने जैसा खड़ा देख रहा था। लोग घबरा गये। कुछ ने तो आंखें भी बन्द कर लीं।

किन्तु तभी किशोर जयकिरण जैन बिजली की तरह लपका। उसने अपनी साइकिल एक ओर फेंक दी। धड़धड़ाती हुई रेलगाड़ी की कोई परवाह न कर वह तेजी से झपटा और उस छोटे बालक को लेकर उस पार निकल गया। लोग सांस रोके देखते रहे और रेलगाड़ी धड़धड़ाती हुई निकल गयी। जब सब शान्त हो गया तो लोगों ने देखा—जयकिरण जैन उस बालक को मौत के मुंह से छीन चुका है। जयकिरण के साहस के कारण ही उस बालक की जान बच सकी।

जयकिरण के अद्‌भुत साहस के कारण, सम्मान के रूप में 'भारतीय बाल विकास परिषद्' ने उसे राष्ट्रीय पुरस्कार दिया है।

वह कुएं में कूद गया

शाम हो रही थी। पौने पांच का समय था। आंध्रप्रदेश के खंमाम जिले का माल्लेपल्ली नामक स्थान। एक चौदह वर्षीय बालक घर लौट रहा था। अचानक उसने एक महिला के चीखने-चिल्लाने का स्वर सुना। वह चौंक उठा। उसने इधर-उधर देखा।

सामने कुएं के पास खड़ी एक महिला जोर-जोर से रो रही थी। बालक ने देखा कि वह कुएं में झांक रही है। जरूर कोई गड़बड़ है, उसके मन ने कहा—'बोंडाला वीरास्वामी ! इस समय कोई नहीं है, जो बेचारी महिला की मदद करे' और दूसरे ही क्षण बालक वीरास्वामी कुएं पर पहुंच गया। उस महिला का चार वर्षीय बालक कुएं में गिर गया था।

बालक वीरास्वामी ने एक क्षण की भी देर करना ठीक न समझा। कुआं दस मीटर गहरा था। उसमें तीन मीटर तक पानी भरा था। गहरे और संकरे कुएं में कूदकर उस डूबते बालक की जान बचाना आसान न था। बचाने वाला खुद भी खतरे में फंस सकता था, किन्तु वीरास्वामी को खतरे की कोई परवाह न थी।

एक पतली रस्सी के सहारे वह कुएं में कूद गया। डूबते हुए बालक को उसने पकड़ लिया। वीरास्वामी को हालांकि चोट भी लग गयी थी, किन्तु ऐसी मामूली चोट के लिए वह चिन्तित न था। बड़ी हिम्मत के साथ वीरास्वामी उस बालक को लेकर कुएं के बाहर आया।

बालक जिन्दा था। तुरन्त उसके प्राथमिक उपचार का इन्तजाम किया गया। वीरास्वामी खुश था कि उसने उस बच्चे की जान बचा ली। वीरास्वामी के इसी साहस-पूर्ण कार्य के लिए 'भारतीय बाल विकास परिषद्' ने उसे राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया है।

विषधर से युद्ध

यह घटना महाराष्ट्र के कोलाबा जिले के अलीबाग तालुका के अन्तर्गत कमालेंपाड़ा ग्राम की है। 21 अगस्त, 1978 को सवेरे जब गांव का प्राइमरी स्कूल खुला तो पहली कक्षा के बच्चे घबराकर चीखते हुए भाग खड़े हुए। दरअसल उस कक्षा में रखे श्यामपट के पीछे एक बहुत बड़ा सांप बैठा हुआ था।

बच्चों का घबराना स्वाभाविक ही था। सांप से तो सभी डरते हैं। उन सबकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाये। उन्होंने आपस में सलाह की, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला।

तुरन्त ही कुछ बच्चे गांव में गये और कुछ लोगों को बुला लाये। सांप मारने की बातें तो सभी लोग बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे थे, किन्तु जब उस सांप का आकार देखते तो उनके हौसले टूट जाते। सांप को मारना इसलिए भी कठिन था, क्योंकि वह श्यामपट के पीछे था और उस पर मार ठीक से न पड़ने का अन्देशा था।

किन्तु काम करने वाले साहसी लोग निर्णय करने में देर नहीं करते। इस बात का परिचय दिया उसी प्राइमरी स्कूल की छठी कक्षा के सोलह वर्षीय छात्र पाटिल रमेश पांडुरंग ने। वह बड़ी देर से खड़े-खड़े सांप को देख रहा था और वह मारने वालों की बनावटी बातें सुन रहा था। उसने सोचा—क्या इन्सान से भी ज्यादा ताकतवाला है यह सांप? बस, रमेश ने कोई एक मीटर लम्बा डण्डा लिया और कमरे में घुस गया। कुछ लोगों ने उसे रोका, किन्तु बालक रमेश निर्भीकता से सांप की ओर बढ़ा। फिर उसने अचानक सांप पर बड़ी तेजी से भरपूर वार किये। उसके वार इतने मजबूत और सही थे कि सांप वहां से हिल-डुल भी न सका। सांप को मारकर रमेश कक्षा के बाहर आया, तो विजय से उसका चेहरा खिला हुआ था। सोलह वर्षीय रमेश ने अपने साहस से बड़े-बड़े तीसमारखां का सिर झुका दिया था। उसके साहस और निर्भीकता के लिए 'भारतीय बाल कल्याण परिषद्' ने उसे पुरस्कृत किया है।

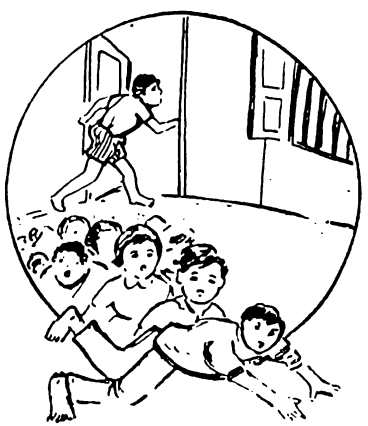

डूबती बालिका को बचाया

तैराकी सीखना सिर्फ शौक नहीं है, यह कई बार मौत से बचने-बचाने का उपाय भी बन जाती है। यह बात सिद्ध हुई महाराष्ट्र, कोलाबा जिले के पनवेल में। वहां डा० नीलकान्त विष्णु बापट की पुत्री कुमारी मनीषा बापट ने तैरना सीखा। साढ़े दस साल की मनीषा को अभी तैराकी सीखे कुछ ही दिन हुए थे कि एक दिन उसकी परीक्षा आ गयी और मनीषा परीक्षा में खरी उतरी।

घटना 9 मई, 1977 की है। मनीषा अपनी मां के साथ तालाब में तैरने गयी थी। वह तैरते-तैरते उस पार पहुंच गयी। थक गयी थी, इसलिए कुछ देर सुस्ताने के लिए वहीं सीढ़ियों पर बैठ गयी।

मनीषा को वहां बैठे कुछ ही क्षण हुए थे कि अचानक उसे मां के चिल्लाने की आवाज सुनायी दी। हुआ यह कि आठ वर्षीया लड़की भावना भी तैराकी सीख रही थी पर उसे अभी कुछ दिन ही हुए थे। भावना जैसे ही पानी में कूदी कि डूबने लगी। उसे डूबता देख उसकी मां ने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू किया।

मां की आवाज सुनकर पहले तो मनीषा कुछ समझी नहीं, लेकिन भावना को डूबते देखकर वह सब समझ गयी। मनीषा तत्काल पानी में कूद पड़ी। वह तेजी से तैरती हुई गयी और भावना को पकड़कर किनारे पर ले आयी। बाद में हालांकि मनीषा की मां भी सहायता के लिए पहुंच गयी थी, किन्तु यदि उस क्षण मनीषा ने भावना को न बचाया होता तो दुर्घटना अवश्य हो जाती।

मनीषा के इस साहस के लिए 'भारतीय बाल विकास परिषद्' ने उसे राष्ट्रीय पुरस्कार देने की घोषणा की है।

आग से खेल

11 मई, 1980 की घटना है। दोपहर का समय था। तेज लू चल रही थी। उस हरिजन बस्ती में सभी घर एक-दूसरे से सटे हुए थे। संतोष अपनी बस्ती के छोटे-से एक बाड़े में कुछ बच्चों के साथ खेल रही थी। अचानक संतोष ने देखा कि पास की झोंपड़ियों में आग लग गयी है। संतोष ने सोचा कि इधर तो आग लग गयी है। इस रास्ते से निकलना मुश्किल है। अब केवल पीछे का ही रास्ता था, लेकिन वहां एक सांड़ बंधा था। वह सांड़ भी एकदम बिगड़ैल और सींग मारने वाला ठहरा।

बस, संतोष ने तुरन्त घास का एक बंडल उठाया। उसका एक सिरा जलाया और उसे सांड़ को दिखाने लगी। आग के डर से सांड़ एक तरफ हट गया और रास्ता बन गया। अब उसने अपने साथियों को वहां से निकाला।

अभी एक और महत्त्वपूर्ण काम बाकी था। वह था, आग को बढ़ने से रोकना। यह भी कम जोखिम का काम न था। फिर भी संतोष ने घरों के छप्पर गिराकर जगह बना दी, जिससे आग आगे न बढ़े। तब तक गांव के लोग भी आ गये। उन्होंने भी आग को फैलने से रोकने में सहायता की।

संतोष के साहसिक कार्य के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे इस वर्ष पुरस्कृत किया है।

अंधे कुएं से मित्र को बचाया

घटना 16 जून 1980 की है। सवेरे के दस बजे थे। ब्यावरा (मध्यप्रदेश) गांव के कुछ लड़के काम पर निकल पड़े थे। कुछ मवेशी चराने के लिए, कुछ लकड़ियां और गोबर इकट्ठा करने के लिए।

हरपालसिंह और तुलसीराम भी इसी तरह काम के लिए निकले थे। चौदह वर्षीय हरपालसिंह मवेशी चरा रहा था। ग्यारह वर्षीय तुलसीराम जाटव गोबर इकट्ठा कर रहा था।

कुछ देर बाद हरपालसिंह पास के कुएं में पानी पीने गया। कुआं करीब चौदह मीटर गहरा था। हरपालसिंह उसके किनारे पर खड़ा हो गया। कुआं सूखा और पुराना था। पानी तो नाममात्र को था। हरपालसिंह सोच ही रहा था कि पानी कैसे पिये। तभी न जाने कैसे उसके पैर के नीचे की ईंट खिसकी और हरपालसिंह संभल न पाया। वह सीधे उस अंधे कुएं में जा गिरा।

उधर तुलसीराम ने देखा कि हरपालसिंह कुएं में गिर गया है। उसने एक क्षण की भी देर न की और पुराने टूटे-फूटे कुएं की ईंटों के सहारे वह किसी तरह कुएं के अंदर उतर गया। देखा, हरपालसिंह बेहोश हो चुका है।

अब तुलसीराम के सामने अजीब परेशानी थी। हरपालसिंह को इस तरह यहां छोड़ना खतरनाक है। मदद के लिए अगर किसी को बुलाये, तो यहां कौन सुनेगा? फिर हरपालसिंह की चोट अगर गहरी हुई, तो देर करने से खतरा बढ़ सकता है।

तुलसीराम के सामने एक ही उपाय था। वह किसी तरह हरपालसिंह को अपनी पीठ पर लादकर कुएं के बाहर ले चले। कुआं पुराना था और उसके अन्दर लगी ईंटें उखड़ रही थीं। हरपालसिंह को कंधे पर लेकर ऊपर चढ़ना कठिन ही नहीं, खतरनाक भी था। स्वयं तुलसीराम जोखिम में पड़ सकता था।

किंतु तुलसीराम ने हरपालसिंह को ऊपर ले चलने का ही निश्चय किया। वह बड़ी सावधानी से चढ़ता हुआ ऊपर आया। हरपालसिंह को एक पेड़ के नीचे लिटाया। तभी कुछ लोग उसकी मदद के लिए भी आ गये। तुलसीराम के साहस की प्रशंसा सभी ने की। भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने उसे इस वर्ष साहस के लिए पुरस्कृत किया है।

विषधरों से संघर्ष

'सांप···सांप···सांप···!' कुछ महिलाएं चिल्लायीं औ डर कर भागीं। धान के उस खेत में करीब पंद्रह महिलाएं काम क र रही थीं।

तभी दूसरी ओर से आवाज आयी, 'सांप···सांप·· सांप···!' और उधर की महिलाएं भी भागीं। एक खेत में दो दो भयानक विषधर। उनसे घिरी हुई महिलाएं। अजीब स्थिति थी।

दर्शकों में एक लड़का भी था। उसका नाम है, आंटो, एम० वी०। वह देख रहा था कि किसो में भी इतना साहस नहीं है कि उन सांपों को मार सके।

बस, आंटो ने नारियल की एक सूखी डाल उठायी। फिर उसने एक-एक कर दोनों सांपों को मार डाला। तब तक कुछ लोग बंदूक और बल्लम जैसे हथियार लेकर आ गये, किंतु वे आंटो का साहस देखकर चकित रह गये। इसी के लिए उसे भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने पुरस्कृत किया है।

आंटो केरल के त्रिचूर जिले में पुत्तूक्कार नामक स्थान का रहने वाला है। चौदह वर्षीय आंटो आठवीं में पढ़ता है। जब मैंने उसे इस सम्मान के लिए बधाई भेजी, तो उसने जो पत्र मुझे लिखा है, वह तुम्हारे लिए यहां लिख रहा हूं—

'आज मेरे नाम पर, मेरी वीरता की प्रशंसा के कई महान् व्यक्तियों के खत आ रहे हैं। पर पैसे की कमी के कारण ठीक समय पर जवाब दे नहीं सकता हूं। मैंने अपने कर्तव्य की पूर्ति की, तो उसमें मेरी प्रशंसा करने के लिए कई लोग आगे बढ़े, इसमें अचरज की बात नहीं है।

'मेरा जन्म एक गरीब परिवार में हुआ। मां-बाप ने दिन-भर काम करके हमारा पालन-पोषण किया था, किंतु वे दोनों बीमारी के पंजे में पड़ गये। घर का सारा दायित्व मेरे हाथ में आ गया है। मैं क्या करूं, खुदा की क्रूरता इतनी हुई। आज पाठशाला छूटने के बाद काम करके उससे जो मिलता है, घर का पालन करता हूं। मैंने जो वीर काम किया, वह मेरा कर्तव्य था। इतना बड़ा पात्र बन जाने की चिंता भी उस समय न हुई थी, पर पेट में चूहा दौड़ते समय ये सब बिलकुल निष्फल मालूम पड़ता है।'

फौलाद की पकड़

आधी रात बीत चुकी थी। डाकोरा ग्राम (जिला फरीदाबाद) में सन्नाटा था। सिर्फ चार डाकू जाग रहे थे। गांव में एक अध्यापक थे, पन्नालाल गुप्ता। डाकुओं ने इन्हीं का घर चुना था। ठीक अवसर देखकर दो डाकू घर के छप्पर पर चढ़ गये। जब डाकू पहली मंजिल पर पहुंचे, तो वहां रखा सामान उन्हें कुछ ठीक लगा। वे उसे खोल-खोलकर देखने लगे। घर की पहली मंजिल पर उस समय अध्यापक पन्नालाल गुप्ता और उनकी पन्द्रह वर्षीया पुत्री सावित्रीदेवी सो रहे थे। खटपट की आवाज सुनकर सावित्री की नींद खुल गयी। सावित्री ने डाकुओं को देखा, तो सारा मामला समझ गयी।

वह चुपचाप उठी। डाकुओं के पास दबे पांव पहुंची और उसने एक डाकू को पीछे से दबोच लिया। अब सावित्री ने चिल्लाना शुरू किया, 'चोर—चोर!'

सावित्री की आवाज सुनकर पिता पन्नालाल गुप्ता घबराकर जागे और सावित्री की ओर भागे। लेकिन जब तक वे वहां पहुंचे, उनकी छाती में गोली लगी। वे वहीं गिर पड़े और दम तोड़ दिया।

सावित्री ने पिता को मरते देखा, परंतु उसने अपना साहस न छोड़ा। डाकू उसकी पकड़ से छूटने के लिए छटपटा रहा था, लेकिन सावित्री की पकड़ उसके लिए मौत का फंदा बन चुकी थी।

डाकुओं ने सावित्री को धमकाया भी कि वह अपनी जान से हाथ धो बैठेगी, किंतु सावित्री ने डाकू को न छोड़ा।

आखिर एक डाकू ने उस पर गोलियों की बौछार कर दी। सावित्री गिर पड़ी, लेकिन उसने तब भी डाकू को न छोड़ा। गोलियां डाकू को भी लगीं। सावित्री ने दम तोड़ दिया। डाकू भी मारा गया।

जब डाकू भाग गये, तो गांव के लोग तथा सावित्री के घर के लोग पहली मंजिल पर पहुंचे। वहां इस वीर बालिका का साहस देखकर सभी ने आदर से सिर झुका लिया। उसके इस साहसिक कार्य के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने मरणोपरांत पुरस्कार की घोषणा की।

पागल गीदड़ से भिड़ंत

उसकी लाल आंखें और लपलपाती जीभ देखकर दस वर्षीया संध्या एक क्षण के लिए स्तब्ध रह गयी। वह सोच भी न पायी कि कोई कुत्ता इतना भयानक हो सकता है और हमला भी कर सकता है। संध्या उस समय घास काट रही थी। हर रोज वह उस इलाके में हंसिया लेकर आती और घास काटती। अंबाला जिले के घामसू गांव में रहने वाली यह बालिका एकदम सीधी-सादी है, किन्तु साहस की धनी है।

4 दिसम्बर 1980 को घास काटते हुए संध्या ने एकाएक आसपास अजीब-सी बदबू महसूस की। वह परेशान हुई कि यह बदबू किधर से आ रही है। फिर जब ध्यान से देखा, तो सामने जीभ लपलपाती मौत खड़ी थी।

संध्या को तभी याद आया कि यह कुत्ता नहीं है, यह तो पागल गीदड़ है। उसे यह भी याद आया कि पिछले कुछ दिनों से गांववाले इस पागल गीदड़ की वजह से बेहद परेशान हैं। कई लोगों को इसने जान से मार डाला है। कुछ लोग इसके काटने से फैलने वाले जहर के कारण मर गये। इसने तो सारे गांव में भयंकर उत्पात मचा रखा है।

संध्या समझ गयी कि इस खूंख्वार जानवर के सामने शराफत या कमजोरी दिखाने से काम नहीं चलेगा। इससे तो मुकाबला ही करना होगा। यह तो छोड़ेगा नहीं। उधर गीदड़ दांत निकाले और मुंह खोले हुए बराबर आगे बढ़ रहा था कि जैसे ही मौका मिले, वह संध्या पर झपटे।

संध्या ने चटपट अपने दुपट्टे को समेटकर मुट्ठी से पकड़ लिया और दूसरे हाथ में हंसिया ले लिया। संध्या ने यह सब जिस तेजी से किया, उतनी ही तेजी से उधर गीदड़ ने हमला किया।

संध्या बड़ी जोर से चीखी। उसकी चीख सुनकर आसपास से दो ग्रामवासी आ गये। उन्होंने जो कुछ देखा, उससे उनकी आंखें फटी-की-फटी रह गयीं।

संध्या और गीदड़ के बीच भीषण युद्ध शुरू हो चुका था। गीदड़ अपने पैने दांतों से संध्या का मांस नोच लेना चाहता था। वह पूरी ताकत से उस दस वर्षीय लड़की से टक्कर ले रहा था। उधर संध्या ने अपना दुपट्टा गीदड़ के मुंह में ठूंस रखा था, जिससे गीदड़ अपने पैने दांतों का इस्तेमाल नहीं कर पा रहा था। संध्या का हाथ गीदड़ की जहरीली लार से भीग

रहा था, लेकिन दूसरे हाथ से वह हंसिये द्वारा गीदड़ पर लगातार वार कर रही थी।

आखिर गीदड़ पर हो रहे हंसिये के वारों ने असर दिखाना शुरू किया। गीदड़ घायल होकर गिर पड़ा, किन्तु संध्या उसे हंसिये से तब तक लगातार मारती रही, जब तक कि वह मर नहीं गया।

संध्या ने अपना काम पूरा किया। वह इतना थक चुकी थी कि उसके बाद वह बेहोश हो गयी। गांव वाले उसे तुरंत अस्पताल ले गये। वहां संध्या का इलाज हुआ और वह कुछ ही दिनों में ठीक हो गयी।

संध्या के इस साहस-भरे कार्य से प्रभावित होकर भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने इस वर्ष संध्या को उसके साहस के लिए पुरस्कृत किया है।

बिजली से युद्ध

उस दिन 9 अक्तूबर, 1981 था, स्थान था कल्याण (महाराष्ट्र)। तीन बच्चे छत पर खेल रहे थे। वहां बिजली का एक तार निकला हुआ था और उसमें बिजली प्रवाहित हो रही थी।

बच्चों को यह बात मालूम न थी। अचानक दीपक नामक लड़का उस तार के पास पहुंच गया। जैसे ही दीपक का शरीर तार से छुआ, वह चीखकर गिर पड़ा। उसे तार से चिपकते देखकर एक मित्र तो घबराकर भाग गया, किन्तु महेश नहीं भागा। उसने पलक झपकते ही एक लकड़ी उठायी और तार को दीपक के शरीर से अलग कर दिया।

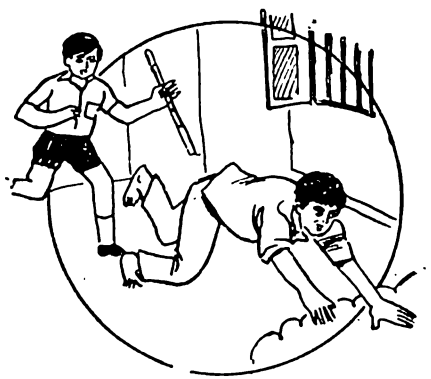

अब उसने शोर मचाकर घर के लोगों को बुलाया। दीपक की दशा बहुत खराब थी। एक डॉक्टर ने तुरन्त दीपक का इलाज किया। उसने कहा कि अगले कुछ सेकंड की देर हो जाती और बिजली का तार अलग न किया जाता, तो दीपक की जान चली जाती।

दीपक को बचाने वाले मित्र महेश खारकर की सबने प्रशंसा की। भारतीय बाल कल्याण परिषद् इस वर्ष साहस के लिए महेश को पुरस्कृत कर रही है।

□□□

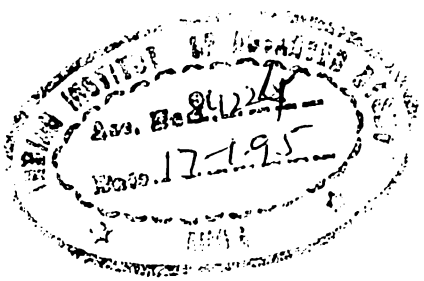

20·7·2000

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
LIBRARY

..ACC.NO...84225
.. Author... देवसरे, हरिकृष्ण
...TITLE... सुनहरी बालों की राजकुमारी

BORROWER'S NAME	SIGNATURE
Mrs. Sharda Chauhan	Sarcl 16/12/96
Mrs. V Bhardwaj	VBhard

Library IIAS, Shimla
H 028.5 D 499 S
00084224

किताब घर